गायत्री प्रार्थना

• श्रीराम शर्मा आचार्य

दो शब्द

परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री साधना उपासना पर 'गायत्री की दैनिक साधना' से लेकर 'गायत्री महाविज्ञान' तक अनेक ग्रंथ लिखे हैं। आध्यात्मिक जिज्ञासु एवं साधक उनसे प्रेरणा-प्रकाश पाते हैं एवं उपासनाक्रम अपनाते हैं। पूज्य गुरुदेव के लिखे हुए गायत्री साहित्य से कुछ विशिष्ट अंश लेकर दैनिक उपासना प्रार्थना क्रम को सुव्यवस्थित, सरल एवं विशिष्ट रूप देने का प्रस्तुत पुस्तक में प्रयास किया गया है। मूल विचार एवं निर्धारण परम पूज्य गुरुदेव का है। उन्हीं की प्रेरणा से उनके ही प्रतिपादित आध्यात्मिक सूत्र-संकेतों को संकलित करने सँजोने का प्रयास भर नए ढंग से किया गया है, जिसमें व्यक्तिगत उपासनाक्रम को वर्णित किया गया है। जहाँ यह पुस्तक व्यक्ति के लिए उपासना विधि और मंत्रों को स्पष्ट करती है, वहीं प्रार्थना के क्रम, गीत आदि की भी विवेचना प्रस्तुत करती है।

पुस्तक में गायत्री परिवार के प्रमुख पाँचों केंद्रों एवं परम पूज्य गुरुदेव व वंदनीया माताजी का परिचय दिया गया है। गायत्री चालीसा, आरती, स्तवन, सत्संकल्प एवं दैनिक संध्या विधि आदि को समन्वित किया गया है।

यह पुस्तक नए-पुराने परिजनों के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक उपासना उपक्रमों को सुचारु रूप से संपन्न करने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

प्रार्थना का महत्त्व

गायत्री मंत्र का अर्थ इस प्रकार है

ॐ (परमात्मा) भूः (प्राण स्वरूप) भुवः (दुःखनाशक) स्वः (सुख स्वरूप) तत् (उस) सवितुः (तेजस्वी) वरेण्यं (श्रेष्ठ) भर्गः (पापनाशक) देवस्य (दिव्य) धीमहि (धारण करे) धियो (बुद्धि) यो (जो) नः (हमारी) प्रचोदयात् (प्रेरित करें)।

अर्थात उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें।

इस अर्थ का विचार करने से उसके अंतर्गत तीन तथ्य प्रकट होते हैं। १–ईश्वर का दिव्य चिंतन, २–ईश्वर को अपने अंदर धारण करना, ३–सद्बुद्धि की प्रेरणा के लिए प्रार्थना। ये तीनों ही बातें असाधारण महत्त्व की हैं।

(१) ईश्वर के प्राणवान, दुःखरहित, आनंदस्वरूप, तेजस्वी, श्रेष्ठ, पापरहित, दैवी गुण संपन्न स्वरूप का ध्यान करने का तात्पर्य यह है कि इन्हीं गुणों को हम अपने में लाएँ। अपने विचार और स्वभाव को ऐसा बनाएँ कि उपयुक्त विशेषताएँ हमारे व्यावहारिक जीवन में परिलक्षित होने लगें। इस प्रकार की विचारधारा, कार्यपद्धति एवं अनुभूति मनुष्य की आत्मिक और भौतिक स्थिति को दिन–दिन समुन्नत एवं श्रेष्ठ बनाती चलती है।

(२) गायत्री मंत्र के दूसरे भाग में परमात्मा को अपने अंदर धारण करने की प्रतिज्ञा है। उस ब्रह्म, उस दिव्य गुण संपन्न परमात्मा को संसार के कण–कण में व्याप्त देखने से मनुष्य को हर घड़ी ईश्वर दर्शन का आनंद प्राप्त होता रहता है और वह अपने को ईश्वर के निकट स्वर्गीय स्थिति में रहता हुआ अनुभव करता है।

(३) मंत्र के तीसरे भाग में सद्बुद्धि का महत्त्व सर्वोपरि होने की मान्यता का प्रतिपादन है। भगवान से यही प्रार्थना की गई है कि आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित कर दीजिए, क्योंकि यह एक ऐसी महान भगवत् कृपा है कि इसके प्राप्त होने पर अन्य सब सुख–संपदाएँ अपने आप प्राप्त हो जाती हैं।

इस मंत्र के प्रथम भाग में ईश्वरीय दिव्य गुणों को प्राप्त करने, दूसरे भाग में ईश्वरीय दृष्टिकोण धारण करने और तीसरे में बुद्धि को सात्विक बनाने, आदर्शों को ऊँचा रखने, उच्च दार्शनिक विचारधाराओं में रमण करना और तुच्छ तृष्णाओं एवं वासनाओं के लिए हमें नचाने वाली कुबुद्धि को मानसलोक में से बहिष्कृत करना। जैसे–जैसे कुबुद्धि का कल्मष दूर होगा, वैसे ही वैसे दिव्य गुण संपन्न परमात्मा के अंशों की अपने में वृद्धि होती जाएगी और उसी अनुपात से लौकिक एवं पारलौकिक आनंद की अभिवृद्धि होती जाएगी।

गायत्री मंत्र में सन्निहित उपर्युक्त तथ्य में ज्ञान, भक्ति, कर्म तीनों हैं। सद्गुणों का चिंतन ज्ञानयोग है; ब्रह्म की धारणा भक्तियोग है और बुद्धि की सात्विकता एवं अनासक्ति कर्मयोग है। वेदों में ज्ञान, कर्म, भक्ति ये तीनों ही विषय हैं। गायत्री में बीज रूप से ये तीनों ही तथ्य सर्वांगीण ढंग से प्रतिपादित हैं।

इन भावनाओं का एकांत में बैठकर नित्य अर्थचिंतन करना चाहिए। यह ध्यान–साधना मनन के लिए अतीव उपयोगी है। मनन के लिए तीन संकल्प नीचे दिए जाते हैं। इन संकल्पों को शांत चित्त से, स्थिर आसन पर बैठकर, नेत्र बंद रखकर मन ही मन दुहराना चाहिए और कल्पना शक्ति की सहायता से इन संकल्पों का ध्यान मनःक्षेत्र में भली प्रकार अंकित करना चाहिए।

(१) परमात्मा का ही पवित्र अंश–अविनाशी राजकुमार मैं आत्मा हूँ। परमात्मा प्राणस्वरूप है, मैं भी अपने को प्राणवान

आत्मशक्ति संपन्न बनाऊँगा। प्रभु दुःखरहित है, मैं दुःखदायी मार्ग पर न चलूँगा। ईश्वर आनंदस्वरूप है, अपने जीवन को आनंदस्वरूप बनाना तथा दूसरों के आनंद में वृद्धि करना मेरा कर्त्तव्य है। भगवान तेजस्वी है, मैं भी निर्भीक, साहसी, वीर, पुरुषार्थी और प्रतिभावान बनूँगा। ब्रह्म श्रेष्ठ है; श्रेष्ठता, आदर्शवादिता एवं सिद्धांतमय जीवन–नीति अपनाकर मैं भी श्रेष्ठ बनूँगा। जगदीश्वर निष्पाप है, मैं भी पापों से, कुविचारों और कुकर्मों से बचकर रहूँगा। ईश्वर दिव्य है, मैं भी अपने को दिव्य गुणों से सुसज्जित करूँगा, संसार को कुछ देते रहने की देवनीति अपनाऊँगा। इसी मार्ग पर चलने से मेरा मनुष्य जीवन सफल हो सकता है।

(२) उपर्युक्त गुणों वाले परमात्मा को मैं अपने अंदर धारण करता हूँ। इस विश्व–ब्रह्मांड के कण–कण में प्रभु समाए हैं। वे मेरे चारों ओर, भीतर–बाहर सर्वत्र फैले हुए हैं। मैं स्मरण करूँगा। उन्हीं के साथ हँसूँगा और खेलूँगा। वे ही मेरे चिर सहचर हैं। लोभ, मोह, वासना और तृष्णा का प्रलोभन दिखाकर पतन के गहरे गर्त में धकेल देने वाली दुर्बुद्धि से, माया से बचकर अपने को अंतर्यामी परमात्मा की शरण में सौंपता हूँ। उन्हें ही अपने हृदयासन पर अवस्थित करता हूँ, अब वे मेरे और मैं केवल उन्हीं का हूँ। ईश्वरीय आदर्शों का पालन करना और विश्वमानव परमात्मा की सेवा करना ही अब मेरा लक्ष्य रहेगा।

(३) सद्बुद्धि से बढ़कर और कोई दैवी वरदान नहीं। इस दिव्य संपत्ति को प्राप्त करने के लिए मैं घोर तप करूँगा। आत्मचिंतन करके अपने अंतःकरण चतुष्टय में (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में) छिपकर बैठी हुई कुबुद्धि को बारीकी के साथ ढूँढूँगा और उसे बहिष्कृत करने में कोई कसर न रहने दूँगा। अपनी आदतों, मान्यताओं, भावनाओं और विचारधाराओं में जहाँ भी कुबुद्धि पाऊँगा, वहीं से इसे हटाऊँगा। असत्य को त्यागने और सत्य को ग्रहण करने में रत्ती भर भी दुराग्रह नहीं

करूँगा। अपनी भूलें मानने और विवेकसंगत बातों को मानने में तनिक भी दुराग्रह नहीं करूँगा। अपने स्वभाव, विचार और कर्मों की सफाई करना, सड़े–गले, कूड़े–कचरे को हटाकर सत्य, शिव, सुंदर की भावना से अपनी मनोभूमि को सजाना है। अब मेरी पूजापद्धति से प्रसन्न होकर भगवान मेरे अंतःकरण में निवास करेंगे, तब मैं उनकी कृपा से जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होऊँगा।

इन संकल्पों में अपनी रुचि के अनुसार शब्दों का हेर–फेर किया जा सकता है, पर भाव यही होना चाहिए। नित्य शांत चित्त से भावपूर्वक इन संकल्पों को देर तक अपने हृदय में स्थान दिया जाए, तो गायत्री के मंत्रार्थ की सच्ची अनुभूति हो सकती है। इस अनुभूति से मनुष्य दिन–दिन अध्यात्म मार्ग में ऊँचा उठ सकता है।

॥ प्रातः प्रार्थना ॥

वह शक्ति हमें दो दयानिधे।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जावें॥
हम दीन दुखी निबलों विकलों, के सेवक बन संताप हरें।
जो हों भूले–भटके बिछुड़े, उनको तारें खुद तर जावें॥
छल द्वेष दंभ पाखंड झूठ, अन्याय से निश–दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा–रस बरसावें॥
निज आन मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देवभूमि में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें॥

गायत्री उपासना का विधि-विधान

गायत्री उपासना तो कभी भी, किसी भी स्थिति में की जा सकती है। हर स्थिति में यह लाभदायी है, परंतु विधिपूर्वक भावना से जुड़े न्यूनतम कर्मकांडों के साथ की गई उपासना

अतिफलदायी मानी गई है। तीन माला गायत्री मंत्र का जप आवश्यक माना गया है। शौच–स्नान से निवृत्त होकर नियत स्थान, नियत समय पर सुखासन से बैठकर नित्य गायत्री उपासना की जानी चाहिए।

उपासना विधि–विधान इस प्रकार है–

ब्रह्मसंध्या जो शरीर व मन को पवित्र बनाने के लिए की जाती है। इसके अंतर्गत षट्कर्म करने पड़ते हैं।

(१) पवित्रीकरण

बाएँ हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढक लें एवं मंत्रोच्चारण के साथ जल को सिर तथा शरीर पर छिड़क लें। पवित्रता की भावना करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

(२) आचमन

तीन बार वाणी, मन व अंतःकरण की शुद्धि के लिए चम्मच से जल का आचमन करें। हर मंत्र के साथ एक आचमन किया जाए।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १॥
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २॥
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३॥

(३) शिखा स्पर्श एवं वंदन

शिखा के स्थान को स्पर्श करते हुए भावना करें कि गायत्री के इस प्रतीक के माध्यम से सदा सद्विचार ही यहाँ स्थापित रहेंगे। निम्न मंत्र उच्चारण करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

(४) प्राणायाम

श्वास को धीमी गति से गहरी खींचकर रोकना व बाहर निकालना प्राणायाम कृत्य में आता है। श्वास खींचने के साथ भावना करें कि प्राणशक्ति और श्रेष्ठता सांस के द्वारा अंदर खींची जा रही है। छोड़ते समय यह भावना करें कि हमारे दुर्गुण–दुष्प्रवृत्तियाँ, बुरे विचार प्रश्वास के साथ बाहर निकल रहे हैं। प्राणायाम निम्न मंत्र के उच्चारण के बाद किया जाए।

ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह:, ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुव: स्व: ॐ।

(५) न्यास

न्यास का प्रयोजन है कि शरीर के सभी महत्त्वपूर्ण अंगों में पवित्रता का समावेश तथा अंत: की चेतना को जगाना, ताकि देवपूजन जैसा श्रेष्ठ कृत्य किया जा सके। बाएँ हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों को उसमें भिगोकर बताए गए स्थान को मंत्रोच्चार के साथ, पहले बाएँ फिर दाएँ स्पर्श करें।

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु। (मुख को)
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों बाहों को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।
(समस्त शरीर को)

(६) पृथ्वी पूजनम्

धरती माता का एक आचमनी जल से अभिसिंचन कर मंत्रोच्चार के साथ पूजन करें।

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं चा धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्॥

आत्मशोधन की ब्रह्मसंध्या के उपरोक्त षट् कर्मों का भाव यह है कि साधक में पवित्रता एवं प्रखरता की अभिवृद्धि हो तथा मलिनता, अवांछनीयता की निवृत्ति हो। पवित्र–प्रखर व्यक्ति ही भगवान के दरबार में प्रवेश के अधिकारी होते हैं।

(७) देवपूजन

गुरु परमात्मा की दिव्य चेतना का अंश है, जो साधक का मार्गदर्शन करता है। सद्गुरु के रूप में पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी का अभिवंदन करते हुए उपासना की सफलता हेतु गुरु आह्वान निम्न मंत्रोच्चार के साथ करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु:, गुरुरेव महेश्वर:।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:॥
अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:॥

गायत्री उपासना का आधार केंद्र महाप्रज्ञा–ऋतंभरा गायत्री है। उनका प्रतीक चित्र सुसज्जित पूजा की वेदी पर स्थापित कर उनका निम्न मंत्र के माध्यम से आह्वान करें। भावना करें कि साधक की भावना के अनुरूप माँ गायत्री की शक्ति वहाँ अवतरित हो स्थापित हो रही है।

आयातु वरदे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मात: ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते॥
ॐ गायत्र्यै नम:। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ततो नमस्कारं करोमि।

माँ गायत्री व गुरुसत्ता के आह्वान व नमन के पश्चात देवपूजन में घनिष्ठता स्थापना हेतु पंचोपचार किए जाते हैं। इन्हें विधिवत संपन्न करें। जल, चंदन, कलावा, अक्षत, पुष्प, धूप–दीप तथा नैवेद्य प्रतीक के रूप में आराध्य के समक्ष प्रस्तुत किए

जाते हैं। एक–एक करके छोटी–तश्तरी में इन पदार्थों को समर्पित करते चलें। जल का अर्थ है–नम्रता, सहृदयता। चंदन, कलावा, अक्षत का अर्थ है–दृढ़ निष्ठा। पुष्प का अर्थ है–प्रसन्नता, आंतरिक उल्लास। धूप–दीप का अर्थ है–सुगंध व प्रकाश का वितरण, पुण्य–परमार्थ तथा नैवेद्य का अर्थ है–स्वभाव व व्यवहार में मधुरता, शालीनता का समावेश।

ये पाँचों उपचार व्यक्तित्व को सत्प्रवृत्तियों से संपन्न करने के लिए किए जाते हैं। कर्मकांड के पीछे भावना महत्त्वपूर्ण है।

(८) जप

गायत्री मंत्र का जप न्यूनतम तीन माला अर्थात घड़ी से प्रायः पंद्रह मिनट नियमित रूप से किया जाए। अधिक बन पड़े तो अधिक उत्तम। होंठ, कंठ, मुख हिलते रहें या आवाज इतनी मंद हो कि दूसरे उच्चारण को सुन न सकें। जप–प्रक्रिया कषाय–कल्मषों, कुसंस्कारों को धोने के लिए पूरी की जाती है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। इस प्रकार मंत्र का उच्चारण करते हुए माला की जाए एवं भावना की जाए कि निरंतर हम पवित्र हो रहे हैं। दुर्बुद्धि की जगह सद्बुद्धि की स्थापना हो रही है।

(९) ध्यान

जप तो अंग–अवयव करते हैं, मन को ध्यान में नियोजित करना पड़ता है। साकार ध्यान में गायत्री माता के आंचल की छाया में बैठने तथा उनका दुलार भरा प्यार अनवरत रूप से प्राप्त होने की भावना की जाती है। निराकार ध्यान में गायत्री के देवता सविता की प्रभातकालीन स्वर्णिम किरणों के शरीर पर बरसने व शरीर में श्रद्धा–प्रज्ञा–निष्ठा रूपी अनुदान उतरने की मान्यता परिपक्व की जाती है, जप और ध्यान के समन्वय से ही चित्त एकाग्र होता है और आत्मसत्ता पर उस कृत्य का महत्त्वपूर्ण प्रभाव भी पड़ता है।

(१०) नमस्कार

ॐ नमोऽस्त्वन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

(११) शुभकामना

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येनमार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

(१२) शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष७शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्ति-र्ब्रह्मशान्तिः, सर्व७शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!
सर्वारिष्ट-सुशान्तिर्भवतु॥

(१३) सूर्यार्घ्यदान

इसके पश्चात पूजा वेदी पर रखे छोटे कलश का जल सूर्य की दिशा में अर्घ्य रूप में निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ाया जाता है।

ॐ सूर्यदेव सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
ॐ सूर्याय नमः, आदित्याय नमः, भास्कराय नमः।

भावना करें कि जल आत्मसत्ता का प्रतीक है एवं सूर्य विराट ब्रह्म का तथा हमारी समस्त संपदा समष्टि के लिए समर्पित-विसर्जित हो रही है।

(१४) विसर्जन

इतना सब करने के बाद पूजा स्थल पर विदाई का निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ करबद्ध नतमस्तक हो नमस्कार किया जाए।

उत्तमे शिखरे देवि, भूम्यां पर्वतं भूर्धनिः।
ब्राह्मणेभ्यो ह्यनुज्ञाता, गच्छ देवि यथा सुखम्॥

तत्पश्चात् सब वस्तुओं को समेटकर यथास्थान रख दिया जाए। जप के लिए माला तुलसी या चंदन की ही लेनी चाहिए। सूर्योदय से दो घंटे पूर्व से सूर्यास्त के एक घंटे बाद तक कभी भी गायत्री उपासना की जा सकती है। मौन–मानसिक जप चौबीस घंटे किया जा सकता है। माला जपते समय तर्जनी उँगली का उपयोग न करें तथा सुमेरु का उल्लंघन न करें।

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।

शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।

अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।

चारों और मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।

अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।

नर–नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

"हम बदलेंगे–युग बदलेगा" "हम सुधरेंगे–युग सुधरेगा" इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

गायत्री स्तवन

ॐ यन्मंडलं दीप्तिकरं विशालम्,
रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्य - दुःखक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥१

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्,
विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम्।

तं देवदेवं प्रणमामि भर्ग,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥२
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं,
त्रैलोक्य पूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त - तेजोमय - दिव्य रूपं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥३
यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं,
धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥४
यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं,
यदृग्-यजुः - सामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥५
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण-सिद्धसंघाः।
यद्योगिनो योगजुषां च संघाः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥६
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं,
ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्काल - कालादिमनादिरूपं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥७
यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं,
यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥८
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं,
उत्पत्ति - रक्षा - प्रलयप्रगल्भम्।

यस्मिन् जगत्संहरतेऽखिलं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥९

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः,
आत्मा परंधाम - विशुद्धतत्त्वम्।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१०

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण-सिद्धसंघाः।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥११

यन्मण्डलं वेद - विदोपगीतं,
यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१२

गायत्री स्तवन (हिंदी पद्यानुवाद)

शुभ ज्योति के पुंज, अनादि अनुपम,
ब्रह्माण्डव्यापी आलोक कर्त्ता।
दारिद्रय दुःख भय से मुक्त कर दो,
पावन बना दो हे देव सविता ॥१

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित,
हे भर्ग भव बंधन मुक्ति कर्त्ता।
स्वीकार कर लो वंदन हमारा,
पावन बना दो हे देव सविता ॥२

हे ज्ञान के घन त्रैलोक्य पूजित,
पावन गुणों के विस्तार कर्त्ता।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण,
पावन बना दो हे देव सविता ॥३

हे गूढ़ अंतःकरण में विराजित,
तुम दोष-पापादि संहार कर्त्ता।
शुभ धर्म का बोध हमको करा दो,
पावन बना दो हे देव सविता ॥४

हे व्याधि नाशक हे पुष्टि दाता,
ऋग्, साम, यजु वेद संचार कर्त्ता।
हे भूर्भुवः स्वः में स्व प्रकाशित,
पावन बना दो हे देव सविता ॥५

सब वेद विद, चारण, सिद्ध योगी,
जिसके सदा से हैं गान कर्त्ता।
हे सिद्ध संतों के लक्ष्य शाश्वत,
पावन बना दो हे देव सविता ॥६

हे विश्व मानव से आदि पूजित,
नश्वर जगत् में शुभ ज्योति कर्त्ता।
हे काल के काल-अनादि ईश्वर,
पावन बना दो हे देव सविता ॥७

हे विष्णु, ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित,
हे भक्त पालक, हे पाप हर्त्ता।
हे काल-कल्पादि के आदि स्वामी,
पावन बना दो हे देव सविता ॥८

हे विश्व मंडल के आदि कारण,
उत्पत्ति-पालन-संहार कर्त्ता।
होता तुम्हीं में लय यह जगत् सब,
पावन बना दो हे देव सविता ॥९

हे सर्वव्यापी, प्रेरक, नियंता,
विशुद्ध आत्मा कल्याण कर्त्ता।
शुभ योग पथ पर हमको चलाओ,
पावन बना दो हे देव सविता ॥१०

हे ब्रह्मनिष्ठों से आदि पूजित,
वेदज्ञ जिसके गुणगान कर्त्ता।
सद्भावना हम सबमें जगा दो,
पावन बना दो हे देव सविता॥११

हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक,
सद्ज्ञान के आदि संचार कर्त्ता।
प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का,
पावन बना दो हे देव सविता॥१२

श्री गायत्री चालीसा

दोहा-ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड॥
जगत् जननि, मंगल करनि, गायत्री सुख धाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी। गायत्री नित कलिमल दहनी॥
अक्षर चौबीस परम पुनीता। इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा॥
हंसारूढ़ श्वेताम्बर धारी। स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला। शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत, दुःख दुरमति खोई॥
कामधेनु तुम सुरतरु छाया। निराकार की अद्भुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई। तरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली। दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं। जो शारद शत मुख गुन गावैं॥
चार वेद की मातु पुनीता। तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥
महामंत्र जितने जग माही। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी। कालरात्रि वरदा कल्याणी॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते। तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे। जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी। जै जै जै त्रिपदा भय हारी॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना। तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा। तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा॥
जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं। माता तुम सब ठौर समाईं॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे। सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता। पालक, पोषक, नाशक, त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी। तुम सन तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। तापर कृपा करें सब कोई॥
मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें। रोगी रोग रहित ह्वै जावें॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा। नाशै दुःख हरै भव भीरा॥
गृह क्लेश चित्त चिंता भारी। नासै गायत्री भय हारी॥
संतति हीन सुसंतति पावें। सुख संपत्ति मुद मोद मनावें॥
भूत पिशाच सबै भय खावें। यम के दूत निकट नहिं आवें॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई। अछत सुहाग सदा सुखदाई॥
घर वर सुखप्रद लहैं कुमारी। विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥
जयति जयति जगदंब भवानी। तुम सम और दयालु न दानी॥
जो सद्गुरु सौं दीक्षा पावें। सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी। लहैं मनोरथ गृही विरागी॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता। सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि, मुनि, यती, तपस्वी, योगी। आरत, अर्थी, चिन्तित भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें। सो सो मन वांछित फल पावें॥
बल, बुद्धि, विद्या, शील स्वभाऊ। धन, वैभव, यश, तेज, उछाऊ॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना। जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय॥

॥ आरती गायत्री माता की ॥

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदिशक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री।
दुःख, शोक, भय, क्लेश, कलह दारिद्र्य दैन्य हर्त्री॥
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगत्धातृ अम्बे।
भवभयहारी, जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे॥
भय हारिणि भव तारिणि अनघे, अज आनन्द राशी।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी॥
कामधेनु सत्‌चित् आनन्दा, जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति तुम सावित्री सीता॥
ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्रार, सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे॥
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी।
जय सतरूपा वाणी, विद्या, कमला कल्याणी॥
जननी हम हैं दीन हीन, दुःख दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल कपटी कपूत, तऊ बालक हैं तेरे॥
स्नेह सनी करुणामय माता चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजै॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिए।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिए॥
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि पुष्टि त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता॥

॥ जयघोष ॥

गायत्री माता की–जय।
यज्ञ भगवान की–जय।
वेद भगवान की–जय।
सत्य सनातन धर्म की–जय।

भारतीय संस्कृति की–जय।
भारत माता की–जय।
परम पूज्य गुरुदेव की–जय।
वंदनीया माताजी की–जय।
१–एक बनेंगे–नेक बनेंगे।
२–हम सुधरेंगे–युग सुधरेगा।
३–हम बदलेंगे–युग बदलेगा।
४–विचार क्रांति अभियान–सफल हो, सफल हो, सफल हो।
५–हमारी युग निर्माण योजना–सफल हो,सफल हो, सफल हो।
६–हमारा युग निर्माण सत्संकल्प–पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो।
७–ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल–सदा जलेगी, नहीं बुझेगी।
८–ज्ञान यज्ञ की ज्योति जलाने–हम घर–घर में जाएँगे।
९–नया समाज बनाएँगे–नया जमाना लाएँगे।
१०–नया सबेरा, नया उजाला–इस धरती पर लाएँगे।
११–जन्म जहाँ पर–हमने पाया, अन्न जहाँ का–हमने खाया, वस्त्र जहाँ के–हमने पहने, ज्ञान जहाँ से–हमने पाया, वह है प्यारा–देश हमारा।
१२–देश की रक्षा कौन करेगा–हम करेंगे, हम करेंगे।
१३–धर्म की रक्षा कौन करेगा–हम करेंगे, हम करेंगे।
१४–युग निर्माण कैसे होगा–व्यक्ति के निर्माण से।
१५–माँ का मस्तक ऊँचा होगा–त्याग और बलिदान से।
१६–मानवमात्र–एक समान।
१७–नर और नारी–एक समान।
१८–जाति, धर्म सब–एक समान।
१९–गंदे चित्र लगाओ मत–माता को लजाओ मत।
२०–नारियो जागो–अपने को पहचानो।
२१–जागेगी भई जागेगी–नारी शक्ति जागेगी।
२२–अनाचार का अंत हो–दहेज प्रथा बंद हो।

२३–नित्य सूर्य का ध्यान करेंगे–अपनी प्रतिभा प्रखर करेंगे।
२४–सावधान–नया युग आ रहा है।
२५–इक्कीसवीं सदी–उज्ज्वल भविष्य।
२६–इक्कीसवीं सदी का आध्यात्मिक केंद्र–शांतिकुंज हरिद्वार।
२७–धर्म की जय हो–अधर्म का नाश हो।
२८–प्राणियों में–सद्‌भावना हो।
२९–विश्व का–कल्याण हो।
३०–वन्दे–वेदमातरम्। वन्दे–देवमातरम्। वन्दे–विश्व मातरम्।

॥ विधाता तू हमारा है ॥

(सोने के पहले की प्रार्थना)

विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है।
बिना तेरी दया कोई नहीं आनन्द पाता है॥
तितिक्षा की कसौटी से, जिसे तू जाँच लेता है।
उसी विद्याधिकारी को, अविद्या से छुड़ाता है।
विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है॥
सताता जो न औरों को, न धोखा आप खाता है।
वही सद्‌भक्त है तेरा, सदाचारी कहाता है।
विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है॥
सदा जो न्याय का प्याला, प्रजा को दान देता है।
महाराजा ! उसी को तू, बड़ा राजा बनाता है।
विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है॥
तजे जो धर्म को, धारा कुकर्मों की बहाता है।
न ऐसे नीच पापी को, कभी ऊँचा चढ़ाता है।
विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है॥
स्वयंभू शंकरानन्दी, तुझे जो जान लेता है।
वही कैवल्य सत्ता की, महत्ता में समाता है।
विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है॥

हिमालय पिता ने गुरुदेव का व्यक्तित्व विनिर्मित किया। गुण, कर्म और स्वभाव की उत्कृष्टता उसी की देन है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन उन्हें पिता का दिया हुआ है। दृष्टिकोण में उत्कृष्टता, लक्ष्य की ऊँचाई, सर्वतोमुखी प्रतिभा, अविचल साहस और अटूट धैर्य जैसी दिव्य संपदाओं को लेकर ही वे ऊँचे उठे और महामानव के स्तर तक पहुँचे। यदि ऊपर से यह अनुग्रह न मिला होता, तो अपने बलबूते इतना उपार्जन करना तो दूर, इतनी सफलता मिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था।

साधनों की दृष्टि से उन्हें असमर्थ और असहाय ही कहना चाहिए। पैसे की दृष्टि से हाथ खाली, माँगने में इतना संकोच, जिससे किसी को आवश्यकता का पता भी न चले। भरपूर विज्ञापन न करने के कारण धनी लोगों की उपेक्षा आदि अनेक बाधक कारणों के रहते हुए भी उनकी योजनाएँ धन के अभाव में रुकी नहीं। इसे उनके मार्गदर्शक की प्रत्यक्ष अनुकंपा ही कहना चाहिए। बोलने में उन्हें रुकावट होती, पर जब भाषण देने खड़े होते, तो जिह्वा पर सरस्वती आ विराजती। लेखनी का जादू भरा संपादन रहता। लेखनी मस्ती पैदा करती और उसमें स्फुरणा जाग पड़ती। उनका लिखा जिसने पढ़ा, प्रभावित हुए बिना न रहा। इस लेखनी का ही चमत्कार है, जिसने करोड़ों को उनके प्रवाह में बहने और साथ उड़ने के लिए विवश कर दिया। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के नए प्रतिपादन ने संसार भर में हलचल पैदा कर दी। संगठन की क्षमता, रचनात्मक कार्यक्रमों की योजना, भावी महाभारत की व्यूह रचना जिस दूरदर्शिता के साथ की जाती रही है और सफलता की प्रतिक्रिया तत्काल परिलक्षित होती है, उसके पीछे गुरुदेव की अपनी प्रतिभा नहीं, वरन निश्चित रूप से उनके महान मार्गदर्शक का अनुदान ही

मूल कारण है। युग निर्माण अभियान की जो कुछ भी सफलता दृष्टिगोचर होती है, उसे उनके मार्गदर्शक का अनुदान माना जाए। यह अनुदान गुरुदेव ने कीमत चुकाकर पाया था, पात्रता सिद्ध करने पर मिला था।

ब्रह्मवर्चस्, आत्मबल और ऋषितत्त्व उन्हें गायत्री माता से ही प्यार–उपहार में मिला था। वे धनी नहीं थे, पर उनकी दिव्य संपदा का पारावार नहीं था। अपने निकट आने वाले किसी को खाली हाथ नहीं जाने देते। जो भी समीप आया, माता जैसी उदार अंतरात्मा ने पहले उसकी व्यक्तिगत व्यथा, चिंता और कठिनाई को समझने की कोशिश की और अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता में कोई कंजूसी नहीं की। किसी पर एहसान करने के लिए नहीं, चमत्कार दिखाकर और फिर उससे कुछ काम निकालने की बात कभी स्वप्न में भी नहीं सूझी। रोते हुए आने वाले हँसते हुए लौटे ।

गुरुदेव की आत्मीयता का विकास ही है, जिसने लाखों व्यक्तियों को मजबूत रस्सी के साथ जकड़कर उनके साथ बाँध दिया। विद्वत्ता, प्रतिभा, भाषण, लेखन, संगठन और आंदोलन आदि बहुत छोटे आधार हैं। यह कला दूसरों को भी अच्छी तरह आती है, पर वे इतना सघन कुटुंब कहाँ बना पाते हैं। उनकी कला केवल आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। ऐसे व्यक्तित्व किसी को घनिष्ठ आत्मीयता से बाँध लेने और उनसे साहसपूर्ण कार्य करा सकने में समर्थ नहीं होते। पूज्य गुरुदेव ने हिमालय के वातावरण में अंतर्मुखी होकर प्रकृति के कण–कण में व्याप्त दिव्यता को पढ़ा, समझा और वे तत्त्वदर्शी के स्तर तक पहुँचे।

कष्ट–पीड़ितों और अभावग्रस्तों को उनका अनुदान सदा मिलता रहा। रोते को हँसाने में उन्हें मजा आता। यह उनका सबसे बड़ा विनोद–व्यसन कहा जा सकता है। जिन्हें वे कुछ ऊँचा उठा देखते, उनकी कामनाओं और तृष्णाओं को तृप्त

नहीं, वरन समाप्त करते और उन्हें बड़प्पन से छुड़ाकर महानता में संलग्न करते। जिन्हें और भी ऊँचा समझते उन्हें और भी ऊँचा उपहार देते। अहंता और तृष्णा छोड़े बिना ब्रह्मवर्चस् मिलता नहीं। जिसे सबसे अधिक प्यार करते, उसकी तृष्णा और अहंता छीनकर अपने सदृश बनाने का प्रयास करते। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न उन्होंने इसी आधार पर देखा। स्वर्ग की ज्ञान– गंगा को धरती पर लाने के प्रयास में भगीरथ की तरह जूझते रहे और गायत्री माता की दिव्य सत्ता उन्हें मुक्त हस्त से सहायता प्रदान करती रही।

गुरुदेव की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने आस्तिकता की गरिमा को अपने जीवन की प्रयोगशाला में यथार्थ सिद्ध किया और उन लोगों का मुँह बंद किया जो इसे भ्रम या छद्म कहते रहे। गुरुदेव ने अपने लेखों और प्रवचनों में ही नहीं, आचरण की भाषा में भी यह कहा कि यदि देवसान्निध्य, ईश्वरीय अनुग्रह और आत्मबल अभीष्ट है, तो सबसे प्रथम चरण दृष्टिकोण के परिष्कार का उठाया जाना चाहिए। अपने को मात्र शरीर और मन से बना मांसपिंड मानकर वासना– तृष्णा के, पेट–प्रजनन के तुच्छ प्रयोजनों में ही संलग्न नहीं रहना चाहिए वरन कुछ आत्मकल्याण की, मानवीय गरिमा की और जीवनोद्देश्य की बात भी सोचनी चाहिए और उसके लिए कुछ कारगर प्रयत्न भी करने चाहिए।

पूज्य गुरुदेव के संकल्प के साथ गुरु का बल और महाकाल का आश्वासन था कि वे किसी से भी बिना सहायता माँगे विचार क्रांति का माहौल तैयार करेंगे। उन्होंने सब कुछ दाँव पर लगा दिया। कुछ धनपति वित्तीय समूहों ने उनके शुभ संकल्प को सुनकर धनराशि देने की बात कही, तो उन्होंने अस्वीकार कर दी। यह उनके ब्राह्मणत्व को एक चुनौती थी।

यदि युग निर्माण परिवार के सदस्य ऐसे ही लोभ–मोह में ग्रस्त, पेट और प्रजनन में व्यस्त और वासना–तृष्णा का पशु

जीवन जीकर मर जाते हैं, तो यह गुरुदेव के लिए भी लज्जा की बात है और इस परिवार के लिए भी कलंक की। हाथी के बच्चे बकरों की शक्ल में दीखें, इसमें उपहास हाथी का भी है और बच्चों का भी। परिवार जब बन ही गया है, तो शोभा इसी में है कि उसका स्तर भी कुलपति के अनुरूप रहे। हर अभिभावक की अपनी संतान के प्रति ऐसी ही इच्छा रहती है। युग निर्माण परिवार का प्रत्येक सदस्य महामानवों की ऐतिहासिक भूमिका निभा सके, वे इसी उधेड़–बुन में लगे रहे। पूज्य गुरुदेव अपना तप और पुण्य देकर आत्मिक लालच भी इसीलिए पूरा करते रहे कि आगे चलकर संभवतः हम बालक उनके आदर्शों को अपनाने का साहस करें।

वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

वंदनीया माताजी के जन्म के साथ ही भविष्यवक्ताओं ने बताया कि एक दैवी सत्ता शक्ति रूप में उनके घर आई है। साधारण से असाधारण बनती हुई यह ऐसे उत्कर्ष को प्राप्त होगी कि करोड़ों व्यक्तियों की श्रद्धा का पात्र बनेगी। हजारों–लाखों व्यक्ति इस अन्नपूर्णा के द्वार पर भोजन करेंगे। कोई भी, कभी भी इसका आशीर्वाद पा लेगा, तो वह खाली हाथ नहीं जाएगा।

एक ऐश्वर्यशाली संपन्न घर में जन्म लेने के बावजूद सादगी भरा जीवन ही उन्हें पसंद था। रेशमी कीमती वस्त्रों की तुलना में गांधी बाबा की बात कहकर सभी को खादी अपनाने की प्रेरणा देतीं और स्वयं भी वही पहनतीं। औरों को भोजन कराने, उनका आतिथ्य करने, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार में वे सबसे आगे बढ़कर चलतीं। जिसने भी एक बार उनके हाथों प्यार भरे स्पर्श के साथ भोजन कर लिया, वह उन्हें सदा याद रखता। विवाह के बाद बड़ी प्रतिकूल परिस्थितियों में वे उस जमींदार घराने में पहुँची, जहाँ आचार्य जी ओढ़ी हुई

गरीबी का जीवन जी रहे थे। जैसा पति का जीवन, वैसा ही अपना जीवन। जहाँ उनका समर्पण, उसी के प्रति अपना भी समर्पण। यही संकल्प लेकर वे जुट गईं, कंधे से कंधा मिलाकर पूर्व जन्मों के अपने आराध्य इष्ट के साथ। २४ वर्षों के २४ महापुरश्चरणों का उत्तरार्द्ध चल रहा था। जब गायत्री तपोभूमि की स्थापना का समय आया, तब पूज्य गुरुदेव १०८ कुंडीय यज्ञ कर २४ वर्षीय अनुष्ठान की पूर्णाहुति करना चाह रहे थे। स्वयं अपनी ओर से पहल करके वंदनीया माताजी ने अपने सारे जेवर अपने आराध्य के कार्य को सफल बनाने के लिए दे दिए। माताजी ने लिखा है–"परिजनों की इस माँ ने अपने जीवन का हर क्षण एक समर्पित शिष्य की तरह जिया है। अपने आराध्य की हर इच्छा को पूरा करने का अथक प्रयास किया है। प्रत्यक्ष दृश्यपटल पर यदि हम दिखाई न भी पड़ें, तो हमारा कृतित्व जो अब तक गुरुसत्ता की अनुकंपा से बन पड़ा है, सबके लिए प्रेरणा का केंद्र बना रहेगा एवं हमारे बच्चे उत्तराधिकारी बनते हुए आदर्शों के क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा करते हुए उज्ज्वल भविष्य समीप लाते दिखाई पड़ेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।"

गुरुदेव के तप की प्रभा जहाँ अपने तीव्र आकर्षण से चकाचौंध करती है, वहाँ वंदनीया माता जी का अपरिमित वात्सल्य हृदय की गहराइयों को तृप्त करता है। माता जी और गुरुदेव के रहस्यमय जीवन की अबूझ पहेली भले ही समझ में न आए, पर इतना अवश्य है कि यदि माता जी न होतीं, तो मिशन का इतना विस्तार संभवतः न होता। यानि कि शक्ति न होती, तो शायद शिव अपना लीला–विस्तार न कर पाते। पूज्य गुरुदेव ने लिखा, "माताजी भगवान के वरदान की तरह हमारे जीवन में आईं। उनके बगैर मिशन के उदय और विस्तार की कल्पना करना तक कठिन था। उन्होंने अपने आने के पहले दिन से ही स्वयं को तिल–तिल गलाने का व्रत ले लिया। विरोध

का तत्त्व तो उनमें जैसे था ही नहीं। यदि वे चाहतीं, तो साधारण स्त्रियों की तरह मुझ पर रोज नई फरमाइशों के दबाव डाल सकती थीं। ऐसे में न तो तपश्चर्या बनतीं और न लोकसेवा के अवसर हाथ लगते। फिर जो कुछ आज तक हो सका, उसका कहीं नामोनिशान तक नहीं होता।"

वंदनीया माताजी ने लिखा है–"जहाँ तक कष्ट सहने का प्रश्न है, सारा जीवन तितिक्षा के अभ्यास में ही लगा है। गुरुदेव की छाया में रहकर अधिक नहीं, तो इतना तो सीखा ही है कि आगत आपत्तियों के समय धैर्य, साहस और विवेक को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहना चाहिए। व्यथा को इस तरह दबाए रहना चाहिए कि समीपवर्ती किसी अन्य को उसका आभास न होने पाए। मानव जीवन सुखों के साथ दुःखों का भी युग्म है। संपत्ति ही नहीं विपत्ति भी भगवान मानव कल्याण के लिए भेजते हैं। गुरुदेव के संपर्क में ऐसे पाठ पढ़ती रही हूँ कि रुदन को मुस्कान में कैसे बदला जाना चाहिए ?"

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है–"माताजी का दर्जा ऊँचा बैठता है, क्योंकि उनका स्नेह सहयोग ही नहीं, वात्सल्य भी हमने भरपूर पाया है। हमें वे बहुत उदारतापूर्वक परिपोषण देती रही हैं। उनका मूल्यांकन तुलनात्मक दृष्टि से कम नहीं किया जा सकता। वे अनवरत रूप से सहधर्मिणी रही हैं। उनके कारण हमें निजी जीवन में भी धर्मधारणा पर अडिग रहने और दूसरों को उस दिशा में चला सकने में असाधारण सहायता मिली है। एक शब्द में उन्हें सजल श्रद्धा कहा जा सकता है। उनकी काया में है तो हाड़–मांस ही, पर कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट–कूटकर न भरी हो। संपर्क में आने वाले हमारी प्रज्ञा से निष्ठावान नहीं बने हैं, वरन, उनकी श्रद्धा के साथ वात्सल्य पाकर निष्ठावान बने हैं। मिशन को अग्रगामी बनाने में किसने कितना योगदान किया, जब इसका लेखा–जोखा भगवान के घर लिया जाएगा, तो कदाचित मूर्द्धन्यों में माता जी का नाम ही

अग्रणी होगा। कभी सोचते हैं कि यदि वे साथ न रही होतीं, तो इतना सब कर पाते क्या, जो कर सके। उनके वात्सल्य ने हमारी ही तरह समूचे गायत्री परिवार को, उनके माध्यम से दूरवर्ती वातावरण को कृतकृत्य किया है।''

महाप्रयाण के पूर्व माता जी ने कहा था, ''निरंतर प्यार, ममत्व बाँटकर ही हमने यह संगठन खड़ा किया था। तुम सब इसी जिम्मेदारी को निभाना। मिशन का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। मुझे अपने पुत्र–पुत्रियों पर पूरा विश्वास है कि स्नेह की डोर में परस्पर बँधे इस मिशन के संस्थापकों व दैवी संचालन तंत्र के नियामक ऋषिगणों द्वारा निर्धारित लक्ष्य अवश्य पूरा होगा।''

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगतीर्थ आँवलखेड़ा (आगरा)

युगतीर्थ आँवलखेड़ा में वह युगपुरुष जन्मा संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन ब्राह्ममुहूर्त में, जो अंगरेजी तारीख से २० सितंबर १९११ के दिन आती थी। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा **परिवार संस्कारों से अनुप्राणित**, पिता भागवत के प्रकांड पंडित, **बहुत बड़ी जागीर के** मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्वरूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है–वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गई थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गई हैं, जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण–कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ, जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया, वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा

करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं, जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है, जहाँ दीपक के प्रकाश में सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कॉलेज है। कन्या इंटर कालेज अब कन्या महाविद्यालय का रूप ले चुका है। गायत्री शक्तिपीठ से अनेक रचनात्मक कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन–जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गई थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुखी, तनावग्रसित व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नए प्राण पाए तथा उनके व परम वंदनीया माता जी के हाथों से भोजन–प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गए। हाथ से बने कागज पर छोटी टेण्ड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी–छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खरच निकलता था। बगल की एक छोटी–सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज साधना स्थली विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीदकर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है, किंतु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गई है, जैसी पूज्यवर के समय में १९४२–४३ में रही होगी। गायत्री महाविज्ञान के

तीनों खंड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष ग्रंथों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों, छोटे–बड़े यज्ञों एवं १००८ कुंडी पाँच विराट यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गए एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थाई रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर शांतिकुंज चले गए।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा :

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किंतु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गई तथा एक गायत्री महाशक्ति का मंदिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पूज्य गुरुदेव की साधना स्थली व प्रातःकाल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी, तो उनकी जन–जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्मभूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुंडी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुंडी यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नर–रत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा संपन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्य श्री ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलंबन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण

विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी–बड़ी मशीनें तथा युग निर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण–विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शांतिकुंज, हरिद्वार

शांतिकुंज, हरिद्वार ऋषि परंपरा के बीजारोपण केंद्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गए। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुनः एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उन्होंने एक विराट रूप देने, सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया। इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने २४ कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़ गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आंरभ कर दिया था। पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्तन सत्र, जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े। यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युगशिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का तांता लगा रहता है। पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं।

प्रखर प्रज्ञा–सजल श्रद्धा रूपी तीर्थ स्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया। यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित किया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना यहीं हुई है।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान परम पूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवीं स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७९ की गायत्री

जयंती पर आरंभ किया गया था। वर्तमान शांतिकुंज–गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थिति यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फलश्रुतियों सहित स्थापित हैं। द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं, जो यह जाँच–पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात क्या–क्या परिवर्तन शरीर–मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आए। इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा–मंत्रशक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों, जैव विद्युत आदि पर पड़ा, यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किए जाते हैं। तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित है, जहाँ विश्व भर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किए गए है। यहाँ प्राय: ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पांडुलिपियाँ हैं। यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है, जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा